Research Paper E-ISSN NO : 2455-295X | VOLUME : 10 | ISSUE : 12 | SPECIAL ISSUE DECEMBER-2024

स्वामी विवेकानन्द तथा गुरूदेव रवीन्द्र नाथ टैगोर के शिक्षा दर्शन में शैक्षिक बहु विषय शिक्षा एवं संस्थागत चुनौतियां

संतोष कुमार सिंह | शोधार्थी (यू.जी.सी. नेट), शिक्षक शिक्षा संकाय, राजा हरपाल सिंह पी.जी. कालेज, सिंगरामऊ, जौनपुर.

ABSTRACT:

स्वामी विवेकानन्द तथा गुरुदेव रवीन्द्र नाथ टैगोर जी के उक्त विचारो से स्पष्ट होता है वे सम्पूर्ण मानवता को प्रकृति वादी छाया में रह कर प्रकृति सुन्दरता को मानव का प्रकाश का प्रतिविम्ब समझा है तथा प्रकृति से सीखने की प्रेणा भी है इन दोनी दर्शन शास्त्रियों ने शिक्षा दर्शन में शैक्षिक बहुविषयक शिक्षा एवं संस्थागत चुनौतियों का सामना करना तथा समाधान करके एक निष्कर्ष पर पहुचने का प्रयास किया है आज वर्तमान शिक्षा के मूल्यों का पतन होने के उपरान्त उसपर इन्होने बढ़चढ़ कर घोर विरोध किया तथा बहुमुखी शिक्षा के चुनौतियों के समाधान निदनात्मक उपचार बताया जहाँ समस्या उत्पन्न होती है शिक्षा का कार्य वही से उसका बहुमुखी निदान भी होना चाहिये। बहुमुखी शिक्षा ही विश्वकल्याण के ओर उन्मुख करती है।

KEYWORDS:

सम्पूर्ण मानवता, प्रकृति सौन्दर्यता, बहुविषयक शिक्षा, मूल्य शिक्षा, विश्वकल्याण.

भूमिका:

बहु विषय शिक्षा और संस्थागत योग्यता व एक भविष्यमुखी दृष्टिकोण के रूप में देखा जाय तो हम स्वामी विवेकानन्द जी एवं गुरूदेव रवीन्द्र नाथ टैगोर के शिक्षा दर्शन पर विचार करते है। स्वामी जी का जन्म (1863-1902) भारतीय इतिहास में उस समय अभ्युदय किये जब देश के लोगों में सांस्कृतिक को बचाने के लिए ब्रिटिश शासन व्यवस्था से विद्रोह करते हुए अपने आम जनमानस में चेतना का अनुभव करने हेतु प्रयास चल रहा था। इसी संक्रमण काल में स्वामी विवेकानन्द जैसे महान विचारक का अवतरण हुआ। उन्होने 19वीं शताब्दी के अत्यन्त दुःखद राष्ट्रीय परिदृष्य व देश की सुसुप्त भावना को जागृत किया, जिसके परिणाम स्वरूप राष्ट्रीय नवजागरण काल आया। तत्कालीन सामाजिक सांस्कृतिक, आर्थिक एवं राजनैतिक सभी क्षेत्रों में देश के सम्मुख अनेको समस्याएं आयी थी। देश में भेदभाव, छुवाछूत, असमानता व विवेदपूर्ण व्यवस्था अपने चरम पर थी। ऐसी स्थिति में स्वामी जी ने अपनी अनोखी प्रतिभा से इन चुनौतियों तार्किक एवं प्रभावी समाधान ढूंढ निकाला। उन्होने इन सभी चुनौतियों के लिए जिसे सबसे उत्तम हथियार माना वह था, बहु विषय शिक्षा और संस्था योग्यता व एक भविष्य मुखी दृष्टि कोण में शिक्षा व संस्थानों द्वारा राष्ट्र के नवनिर्माण की शक्ति निहित हो सकती है। स्वामी विवेकानन्द जी के सम्पूर्ण चिन्तन मूल्य परक आधारित मानव निर्माण की शिक्षा का केन्द्र बिन्दु दृष्टिगत होता है, जो वर्तमान में बहु विषय शिक्षा और संस्थागत योग्यता व एक भविष्य मुखी दृष्टि की प्रासंगिकता को और हमे उन्मुख होने पर जोर देती है। इसी प्रकार गुरूदेव रवीन्द्र नाथ टैगोर जी ने पश्चिम बंगाल में शान्ति निकेतन विश्व विद्यालय की स्थापना करके तथा प्रकृति की छठा में विद्यामान शिक्षा प्राप्त किया एवं प्रकृति की सौन्दर्यता में रह कर संस्थानों का भविष्य उज्जवल रहेगा तथा भावी शिक्षा का नवायार्थ होगा, अंधकार से प्रकाश की ओर बहु विषय आधरित शिक्षा पर जोर दिया तथा भविष्य मुखी दृष्टि से देखा जाय तो शिक्षा संस्थानों का उपादेयता/प्रासंगिकता अपनी अहम भूमिका निभाती है, जिससे राष्ट्र का निर्माण सुदृण एवं सशक्त भय मुक्त शक्ति होता है। अर्थात सर्वगुण सम्पन्न या गुणवत्तापूर्ण शिक्षा संस्थानों का भविष्य उज्जवल होता हैं इन दर्शानिको के गुणयुक्त उपदेश पर विचार करना चाहिए तथा जीवन में क्रियान्यवित करनी चाहिए, जिससे एक आदर्श देश के नागरिक बन सके तथा देश के लिए कुछ कर सके।

वर्तमान शिक्षण संस्थानों की प्रमुख समस्या व चुनौतियां:

स्वामी विवेकानन्द जी व गुरूदेव रवीन्द्र नाथ टैगोर जी के शैक्षणिक दर्शन में आध्यात्मिक व भौतिक विकास पर बल देते हुए मानव के व्यक्तित्व निर्माण को प्राथमिकता दी गई है, जिनका अनुसरण कर वर्तमान समाज की समस्याओं का समाधान किया जा सकता है। शिक्षा मनुष्य को मानव बनाने की प्रक्रिया है या यह कहा जाय कि मनुष्य को मानव बनाने का दायित्व शिक्षा पर है। गुरूदेव रवीन्द्र नाथ टैगोर जी ने शान्ति निकेतन वि.वि. की स्थापना करके शिक्षा की गुणवत्ता पर तथा शिक्षा मूल्यों जैसे-नैतिकता, प्राचीन वैदिक शिक्षा व्यवस्था, प्रकृतियुक्त शिक्षा पर जोर दिया। इसी प्रकार स्वामी विवेकानन्द जी ने रामकृष्ण मिशन संस्थान की स्थापना करके शिक्षा व्यवस्था प्रणाली में समस्याओं का समाधान/निदान करने की पहल की है। रवीन्द्र नाथ जी के अनुसार "शिक्षा केवल परीक्षा पास करना ही और डिग्री हासिल करना नही है।

अपितु प्रगति किसी पेशे को अपना कर जीविकोपार्जन करना होना चाहिए। स्वामी जी के अनुसार "आत्मविश्वास, ज्ञान की खोज आत्म सुधार, दूसरो की सेवा और सार्वभौतिक भाईचारे के महत्व पर जोर देते है"। उनका आदर्श वाक्य "उठो जागो और तब तक मत रूको जब तक लक्ष्य की प्राप्ति न हो जाय"। आज भी दुनियाभर में लाखंांें लोगों को प्रेरित करती है। भारत एक ऐसा देश है, जिसका शिक्षा के क्षेत्र में समृद्ध इतिहास और परम्परा है। इसके आक्रमणों की निरन्तर श्रृंखला के कारण राष्ट्र ने अपनी राजनैतिक एकता प्राचीन शिक्षा प्रणाली की सांस्कृतिक परम्परा खो दी। स्वामी विवेकानन्द और रवीन्द्र नाथ टैगोर जो 18वीं शताब्दी के उत्तरार्ध के दौरान रहते थे 19वीं सदी के पूर्वार्ध में कई मुद्दो पर समान विचार थे। दोनों ने बनाया स्वतन्त्रता आन्दोलन और सांस्कृतिक पुनः जागरण में महत्वपूर्ण योगदान दिया। दोनों ने शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन का एक साधन माना। आक्रमणकारियों ने देश में प्रचलित सार्व भौतिक शिक्षा की पारम्परिक प्रणाली को नष्ट कर दिया और इन दोनों प्रतिष्ठित व्यक्तियों ने इस व्यवस्था को पुनः स्थापित करने एवं राजनीतिक स्वतन्त्रता की प्राप्ति के लिए अनिवार्य शर्त पर विचार किया। वे दोनों एक ऐसी शिक्षा प्रणाली के समर्थक थे जो मूल्य आधारित होने के साथ-साथ प्राचीनत में निहित थी।

वास्तव में वर्तमान स्थिति: शिक्षण संस्थानों की स्थितियां बड़ी नाजुक है, जिसे हम सोचने तथा जानने पर विचार करते है कि शिक्षा व्यवस्था में किस प्रकार सुझाव व सुधार की जरूरत है। इन तथ्यों पर विचार करने की पहल करने की अत्यन्त जरूरी है। यह एक वर्तमान समय में चुनौतियां है।

वर्तमान भारतीय शिक्षा प्रणाली की समस्याएं एवं चुनौतियां: हाल के दशको में देश के आर्थिक, सामाजिक व अन्य क्षेत्रों में ढांचागत एवं नीतिगत स्तर पर काफी प्रगति हुई है। फलस्वरूप देश की विकास दर तेजी से बढ़ी है। इस बढ़ती विकास दर ने अन्य क्षेत्रों के साथ-साथ शिक्षा के क्षेत्र में भी सुधारों को गति प्रदान की है, लेकिन इन परिवर्तनों ने हमारी शिक्षा व्यवस्था की मूल समस्याओं को दूर नही किया है । प्रस्तुत लेख में हम वर्तमान शिक्षा व्यवस्था की विश्व में स्थिति विद्यमान समस्याओं एवं संभावित समाधानों की चर्चा करेंगे।

हाल के वैश्विक अध्ययन:- न्यूयॉर्क के पी.ई.यू. रिसर्च सेंटर (च्मू त्मेमंतबी ब्मदजमत) द्वारा विश्व के 90 से अधिक देशों में स्कूली शिक्षा मानकों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। यह अध्ययन विश्व में धर्म एवं शिक्षा नाम से किया गया। यह दुनिया के प्रमुख धर्मो के बीच "शैक्षिक प्राप्ति" पर केन्द्रित है। इसमें हिन्दुओं में "शैक्षिक प्राप्ति" (Ducational Attainment) पर केन्द्रित है। हिन्दुओं में "शैक्षिक प्राप्ति" का स्तर सबसे कम पाया गया और भारतीय विद्यालीय शैक्षिणिक स्वस्था को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर सबसे निम्न स्थान प्रदान किया गया। दूसरी तरफ औसत स्कूली वर्ष के सन्दर्भ में देखा जाय तो ईसाई धर्म में 9.3 वर्ष, बौद्ध धर्म में 7.9 वर्ष है। जबकि मुस्लिम एवं हिन्दू धर्म में औसत स्कूली वर्ष 5.6 वर्ष है। जो कि वैश्विक औसत 7.7 वर्ष से काफी कम है।

इसी प्रकार का अध्ययन हार्वर्ड वि.वि. और कोरिया वि.वि. के आर.जे. बैरो (R.J Barro) द्वारा वर्ष 2011 में किया गया था और उसने भी लगभग इसी प्रकार का निष्कर्ष निकाला था।

वर्ष 2015 के राष्ट्रीय सर्वेक्षण नमूना के परिणामों में भी माध्यमिक विद्यालयों के बच्चों में गणित, विज्ञान और अंग्रेजी को सीखने की क्षमता में भारी गिरावत दर्ज की गई।

दिल्ली में हुए एक हालिया अध्ययन से पता चला है कि शहर के केवल 34 प्रतिशत बच्चे ही कुछ वाक्य पढ़ सकते है।

सकारात्मक पक्ष: अनेक अध्ययनों से यह निदान मिला है कि विश्व में सीखने की दृष्टि से भारतीय बच्चें किसी अन्य देश से आगे है। उदाहरण स्वरूप अमेरिका में भारतीय अमेरिकी सबसे ज्यादा शिक्षित समुदायों में से एक है।

शैक्षिक समस्याएं:

1. मुख्य समस्या शासन की गुणवत्ता में कमी मानी गई है।

2. शिक्षा प्रणाली "समावेशी" नही है।

3. शिक्षक प्रबन्धन, शिक्षक की शिक्षा और प्रशिक्षण, स्कूल प्रशासन और प्रबन्धन के स्तर पर कमी।

4. पाठ्यक्रमों में व्यवहारिकता की कमी।

5. स्कूल स्तर के आकड़ों की अविश्सनीयता।

6. आर्थिक रूप से कमजोर वर्गो (म्॔ै) के लिए किये गए।

7. शिक्षा के अधिकार अधिनियम (त्ज्म्) को जमीनी स्तर पर लागू न किया जाना इत्यादि।

8. अवसंरचना का अभाव।

9. शिक्षा संस्थानों की खराब वैश्विक रैंकिंग।

10. प्रदान की गई शिक्षा और उद्योग के लिए आवश्यक शिक्षा के बीच अन्तर।

11. महंगी उच्च शिक्षा।

12. लैंकिक मुद्दे।

13. भारतीय बच्चों के लिए आधारभूत सुविधाओं की कमी।

शैक्षिक समस्याओं/चुनौतियों का समाधान:

- शिक्षा क्षेत्र में प्रौद्योगिकी को बढ़ावा देना।
- शिक्षकों के प्रशिक्षण की व्यवस्था करना।

- सरकारी खर्च को बढावा।

- समावेशी शिक्षा प्रणाली पर जोर देना इस पर स्वामी विवेकानन्द जी तथा गुरूदेव रवीन्द्र नाथ टैगोर जी भी जोर दिया तथा बढ़ावा दिया।

- गुणवत्ता की शिक्षा को बढ़ावा देना स्वामी जी, गुरूदेव रवीन्द्र नाथ टैगोर ने विशेष बल दिये।

- शिक्षा क्षेत्र में ढांचागत विकास हेतु पी.पी.पी. मॉडल को अपनाना।

- समावेशी शिक्षा नीति का निर्माण करना, उस पर विशेष कार्य किया गया, जिससे शिक्षा गुणवत्तापरक, मूल्यपरक हो यह सभी स्वामी विवेकानन्द तथा संस्थानों को सुव्यवस्थित बनाने अच्छी शिक्षा पर बल रवीन्द्र नाथ टैगोर जी ने दिया था।

शिक्षा के क्षेत्र में सरकार द्वारा उठाये जा रहे प्रमुख कदम:

सरकार द्वारा शिक्षा व्यवस्था में सुधार लाने हेतु टी.आर. सुब्रह्मण्यम समिति का गठन किया गया था। समिति ने शिक्षा क्षेत्र के लिए एक नया शिविल सर्विस कैडर बनाने यूनिवर्सिटी ग्रांट कमीशन (UGC) का उन्मूलन कक्षा-5 तक निरोधक नीति (No Detention Policy) जारी रखना और प्राथमिक विद्यालय स्तर पर अंग्रेजी की शिक्षा देने जैसे अनेक महत्वपूर्ण सुझाव दिये थे। इस समिति के प्रावधानों को सरकार द्वारा अभी तक लागू नही किया गया है।

- सरकार ने हाल ही में भारतीय शिक्षा नीति को तैयार करने के लिए कस्तूरीरंगन समिति का गठन किया। इस समिति का प्रमुख कार्य भारतीय शिक्षा व्यवस्था को समकालीन बनाने उसकी गुणवत्ता में सुधार करने की, शिक्षा के अन्तर्राष्ट्रीय करण तथा विदेशी वि.वि. के भारत में प्रवेश जैये कई महत्वपूर्ण प्रावधानों पर डोर मैप तैयार करना है।

निष्कर्ष:

बच्चों के भविष्य को सही राह दिखाने एवं देश में समावेशी विकास को बढ़ावा देने हेतु यह आवश्यक है कि शिक्षा व्यवस्था को चुस्त-दुरूस्त किया जाय। अतः हमे अन्य सुधारों के साथ-साथ उचित प्रशासन मानको, सरकार द्वारा पर्याप्त प्रोत्साहन और चेक और बैलेंस की नीति अपनाने की जरूरत है। वैदिक शिक्षा व्यवस्था को पुनः जीवित करने की सलाह दी। स्वामी विवेकानन्द एवं गुरूदेव रवीन्द्र नाथ टैगोर ने यदि शिक्षा का जो व्यवसायीकरण होता जा रहा है उसका घोर विरोध व्यक्त किया है तथा शैक्षिक मूल्यों का ह्रास्य होता जा रहा है, इन सब पर अंकुश लगना चाहिए। समय-समय पर शिक्षा की गुणवत्ता पर बल देना चाहिए। शिक्षा का उद्देश्य नैतिक मूल्यों को एवं वैदिक परम्पराओं को जीवित करना है, न की पतन की ओर अग्रसरित करना। यदि भारत की पहचान प्राचीन काल से देखा जाय तो आज वर्तमान समय में यह शिक्षा व्यवस्था की प्रणाली बड़ी दैनीय स्थित पर आ खड़ी हुई है। प्राचीन समय में शिक्षा को तृतीय नेत्र के रूप में जाना जाता था। जो व्यक्ति शिक्षित होता था उसका मान सम्मान अधिक रहता था। इन सभी तथ्यों पर हमे तथा आम जनमानस को गहन अध्ययन करना चाहिए तथा पुनः मूल्य परक शिक्षा और मूल्यों का जो ह्रास्य हो रहा है उस चुनौतियों को हमे स्वीकार नही करना चाहिए। अपितु उस पर समाधान हेतु नवीन नवाचार उपाय करने की जरूरत है तथा शिक्षा के द्वारा हमे जनमानस को जागरूक करना हमारा नैतिक कर्तव्य बनता है।

REFERENCES

1. आचार्य (1974) और सिद्धान्त में प्रख्यात भारतीय विचारको का योगदान उन्नीसवीं और बीसवीं शताब्दी के दौरान भारतीय शिक्षा का अभ्यास महाराष्ट्र का विशेष सन्दर्भ
2. अविनाशी लिंगन, टी.एस. (1974) स्वामी विवेकानन्द का शैक्षिक दर्शन। कोयंबटूर श्रीराम कृष्ण मिशन विद्यालय
3. अरूण भास्कर (2004) विवेकानन्द का व्यवहारिक वेदान्त एम फिल थीसिस, दर्शन शास्त्र विभाग केरल वि.वि.
4. रवीन्द्र नाथ टैगोर के शैक्षिक दर्शन
5. चार्ल (1974) शिक्षा में अनुसांधन का एक सर्वेक्षण
6. कार्नेलिमस जे.जे. (1930) रवीन्द्र नाथ टैगोर, भारत के स्कूल मास्टर, कोलंबिया वि.वि.
7. https://wwwdrishtios.com